

किसी नौकरी को पाने की आशा से बिना वेतन
दफ्तर में काम करने की भावना 3. आसरा।

उम स्त्री. (अ.) दे. उमर।

उमकैद स्त्री. (तत्.) आजीवन कारागार, जीवन
भर के लिए कारावास की सजा स्त्री. (अर.)
न्यायालय द्वारा उम भर के लिए सुनाई गई
कैद की सजा।

उमकैदी वि./पुं. (अर.) अपराधी जिसे आजीवन
कारावास का दंड दिया गया हो।

उम्लाउट पुं. (जर्म.) भाषा वि. दे. उम्मलाउट

उरंगम पुं. (तत्.) (उर अर्थात् छाती के बल चलने
वाला) साँप।

उरः/उरसे पुं. (तत्.) 1. उर, छाती, वक्ष, हृदय 2.
मन, चित्त।

उरःस्थ वि. (तत्.) हृदय में स्थित, चित्त में बसा
हुआ, मनोगत।

उर पुं. (तत्.) 1. वक्षस्थल, छाती 2. दिल, हृदय,
उरः उर, उरस और उरो भी उरस के ही रूप हैं
जैसे- उरस्त्राण, उरः क्षत, उरश्छद (उरः+छदस),
उरोज।

उरई स्त्री. (तत्.) 1. उशीर, खस, एक प्रकार के
घास की सुगंधित जड़ जिसके बने पंखे, पर्दे
गर्मियों में उपयोगी होते हैं 2. खस की पट्टी।

उरग पुं. (तत्.) साँप।

उरगभूषण पुं. (तत्.) उरग अर्थात् सर्प को
आभूषण की तरह धारण करने वाले भगवान्
शिव, महादेव।

उरगराज पुं. (तत्.) 1. सर्पों का राजा, सर्पराज,
नागराज 2. वासुकि नाग।

उरगस्थान पुं. (तत्.) 1. सर्पों का आवास-स्थान,
बाँबी 2. पाताल-लोक।

उरगाद वि. (तत्.) [उरग+अद] जो सर्पों को खाता
है, सर्पभक्षी। पुं. 1. मोर, मयूर 2. गरुड़।

उरगारि पुं. (तत्.) [उरग+अरि] 1. सर्पों का
दुश्मन, पन्नगारि 2. गरुड़ 3. मोर 4. नेवला।

उरगी स्त्री. (तत्.) सर्पिणी, नागिन।

उरज पुं. (तत्.) उरोज, स्तन, कुच।

उरज/उरजात पुं. (तत्.) स्तन, कुच, उरोज।

उरझान स्त्री. (तद्.) लगाव, उलझन, किसी
व्यक्ति या वस्तु के प्रति रुझान।

उरझारी वि. (तद्.) अव्यवस्थित, उलझी स्थिति
वाला।

उरद पुं. (तत्.) दे. उड़द।

उरधारना स.क्रि. (तद्.) 1. मन में रखना या
धारण करना 2. विस्तृत करना या फैलाना,
उधेड़ना, बिखराना।

उरबसी स्त्री. (तद्.) 1. एक आभूषण जिसे हृदय
पर धारण किया जाय टि. हृदय में रहने वाली
स्त्री या नायिका 2. उर्वशी।

उरमंडन पुं. (तत्.) 1. हृदय या वक्ष का आभूषण
2. हृदयाभूषण जैसा प्रिय व्यक्ति 3. हृदय में
बसा प्रेमी।

उररीकृत वि. (तत्.) स्वीकार किया गया।

उरश्छद पुं. (तत्.) हृदय का रक्षक कवच।
हृदयत्राण।

उरस पुं. (तत्.) टि. संस्कृत का मूल शब्द उरः या
उरस् ही है, हिंदी में 'उर' शब्द प्रयुक्त होता है,
परंतु समासयुक्त पदों में यह 'उरस्', 'उर' या
'उरो' रूप ले लेता है, हृदय, मन वि. रस रहित,
जो वस्तु नीरस हो।

उरसिज पुं. (तत्.) वक्षस्थल में उत्पन्न स्तन-
द्वय, कुच।

उरस्क पुं. (तत्.) हृदयस्थल, मन या चित्त।

उरस्त्राण पुं. (तत्.) छाती की रक्षा के लिए बाँधा
जाने वाला कवच। हृदय कवच, उरश्छद।

उरस्थ वि. (तत्.) हृदय में स्थित, मन में
विद्यमान।